नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

संगीत एवं साहित्य के प्रसार-प्रचार में चारणों की भूमिका

अक्षोभ्य भारद्वाज
शोधार्थी, श्री श्री यूनिवर्सिटी, कटक, उड़ीसा

Dr. Reeta Tailor
Honorary Professor, Faculty of Arts Communication and Indic Studies
Sri Sri University, Cuttack, Oddisha.

सार-संक्षेप

आधुनिक युग में हम पूर्ण रूप से अत्याधुनिक तकनीक एवं यांत्रिकीय संसाधनों से भरे हुए है। हम एक ऐसी पीढ़ी हैं जो निम्न तकनीकी व्यवस्था से आधुनिक, अत्याधुनिक और अब स्मार्ट होते हुए भी अनस्मार्ट की दिशा में अग्रसर है। ऐसे में संगीत एवं नृत्य के प्रचार-प्रसार कि बात करे तो मेरे शोध का विषय चारण एवं चारण साहित्य पर चिंतन करना है। कला के प्रचार-प्रसार में तकनीक की मूलभूत भूमिका का प्रमाण, चारणों के प्रचार-प्रसार की पद्धति व उसकी उपयोगिता की उत्कृष्टता से प्रमाणित की जा सकती है। संगीत एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में चारणों की भूमिका है ! गुणात्मक विश्लेषण-साहित्य, साहित्यकार, उनकी लेखनी, ग्रंथों में दी गई सूचनाएँ, इतिहास और इतिहासकारों द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाएँ, दस्तावेज, चलचित्र, ध्वनि मुद्रण द्वारा प्राप्त जानकारी के माध्यम से चारणों के मूल अनुदानों का विश्लेषण एवं अनुसन्धान में प्रयोग। चारण जाती पुरातन काल से लेकर आज के आधुनिक युग तक निरंतर अपनी आध्यात्मिक कला साधना प्रचार-प्रसार का कार्य करती जा रही है। आज भले ही चारण नृत्यकारो की जगह चारणी साहित्यकारों की अधिकता दिखती है परन्तु यदि साहित्य, संगीत, कविता, गीत एवं विभिन्न तरह के गान आज भी उनके द्वारा उनके सत्संगो में परिभाषित हो रहे हैं तो वो भी अपने आप में सराहनीय है।

मुख्य शब्द : चारण, संगीत, साहित्य, कथाकार, गन्धर्व

शोध-पत्र

हम एक ऐसी पीढ़ी हैं जो तकनीकी व्यवस्था से आधुनिक से अत्याधुनिक एवं कम से कम समय व मूल्य में अधिक से अधिक सुविधाओं के प्रति समाज को प्रेरित कर रहे है इसके सकारात्मक परिणाम और नकारात्मक अनुदान भी समाज को प्रभावित कर रहे है। नकारात्मक अनुदान से आशय, वैदिक तकनीकों के बारे में स्वल्प ज्ञान उसका अधूरा प्रयोग व वेदो में दिए गए अन्यतम तकनीकों के प्रति हमारी उपेक्षा है। विभिन्न दर्शनों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में ज्ञान की उपलब्धता वैदिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए अभूतपूर्व परिवर्तन लाने में सक्षम है, लेकिन इसके पीछे प्रत्येक दार्शनिक की व्याख्या अलग-अलग है और ये व्याख्या की विविधता इस पीढ़ी के मन में भ्रम पैदा कर देती है। इस भ्रम से ही हमारे उत्कृष्ट कोटि के वैदिक ज्ञान के प्रति समाज में आशंका व अविश्वास का जन्म होता है। हमारे इस अध्ययन का लक्ष्य आज के नवीन संचार माध्यमों का आदि माध्यमों के साथ विशेष सम्बन्ध है एवं जितनी गभीरता से हम इसका शोध करते है हम पाते है की सनातन धर्म हमेशा से ही तकनीकी रूप से उन्नत व आधुनिकता से परिपूर्ण रहा है। चारण समाज अपने भू व आकाश मार्ग से विचरण करने की क्षमता के लिए जाना जाता है जो की आधुनिक युग में दूरगामी विचरण व संचार का सबसे आधुनिक प्रमाण है। वो न केवल एक दूसरे को पृथ्वी एवं आकाश लोक के सभी घटनाओं से सूचित करते थे बल्कि मनुष्य समाज में उन घटनाओं से ली गयी प्रेरणाओं का भी संचार करते थे। हमारा शोध पूर्णतः चारण समाज के आधुनिकता व उनके संचार करने के माध्यमों एवं पद्धतियों को समर्पित है।

एकादश नाट्य संग्रह के अनुसार चारणों की उत्पति भगवती माँ पार्वती की छाया से हुई, ऐसा कहा जाता है कि शिव परिवार के सभी वाहन एक दूसरे से विपरीत आचरण के होने के कारण नित्य एक दूसरे को क्षति पहुँचाते थे और महादेव को नित्य नवीन वाहनों का निर्माण करना पड़ता था। इसके उपाय स्वरूप भगवती ने अपनी छाया से जो कृत्या उत्पन्न की उसे सभी वाहनों की देखरेख व उनको चराने का भार सौंपा। जब ये कृत्या वाहनों को चराते थे तो अपने समय के सही प्रयोग स्वरूप व सकारात्मक परिवेश की सृष्टि हेतु, ईश्वर के गुणगान से पूर्ण कवित्त, वेदो के श्लोक व नाना प्रकार के गीत गाया व वाद्य यन्त्र बजाया करते थे। ये एक वैदिक संचार माध्यम का अन्यतम प्रमाण है की संगीत व श्लोक न की मात्र मनुष्य बल्कि पशुओ में भी साधुता व सद्भाव सृजन करने में सक्षम है।

पद्मपुराण के अनुसार चारणों की इस अद्भुत क्षमता से मुग्ध होकर पृथु राजा ने उनको पृथ्वी में कलिंग राज्य प्रदान किया।

चारणाय ततः प्रादात् कलिङ्ग देशमुक्तमम्।
पृथुः प्रसाद्य धर्मात्मा है हयं देशमेव च॥
(पद्मपुराण; भूमिखंड; 24/88)

एक कथाकार होने के फलस्वरूप संचार के लिए संगीत से उत्कृष्ट कोई माध्यम हमें ज्ञात नहीं इसीलिए ये शोध पूर्णतः संगीत व नृत्य का चारणों से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु समर्पित है।

नृत्य और शास्त्र से सम्बंधित परिचय को परिभाषित करने के लिए प्रस्तुत श्लोको के माध्यम से उपयुक्त और कुछ भी नहीं हो सकता–

किंकिणीवाद्यवेदी च वृत्तो विकटनर्तकैः।
मर्मज्ञः सर्वरागेषु चतुरश्चारणो मतः॥
(संगीत रत्नाकर, 6/1329)

अर्थात्–किंकिणी (घुंघरू) वाद्य के प्रयोग को जानने वाला विकट नर्तकों से घिरा हुआ, समस्त रागों का मर्मज्ञ ऐसे चतुर को चारण कहते हैं। स्कंध पुराण के एक श्लोक के अनुसार–

गन्धर्वास्तावेश लोकोऽमी गंधर्वाश्र्व शुभव्रताः
देवानां गायकाह्येते चरणाः स्तुतिपाठकाः
(स्कन्दपुराण काशीखण्ड 8)

अर्थात्–जो गन्धर्वो के सामान और गन्धर्वो की ही तरह अपने शुभ एवं दिव्या आचरण का निर्वहन करते हुए देवताओं कि स्तुति एवं पाठ करते है वे चारण कहलाते हैं।

भरत कोष में मिले कुछ महत्त्वपूर्ण श्लोको के अनुसार आचार्य कुम्भः ने जो लिखा है वो इस प्रकार है–

द्विपद्या वर्णतालेन चर्च्चर्या वा मनोहरैः।
सलास्यैर्गतिभेदैश्च मण्डलीभूय सर्वशः॥

वत्र नार्यः प्रनृत्यन्ति प्राप्ते वासन्तिकोत्सवे।
ताळिकाभिरलंकृष्टा, देशभावाविभूषिता।
तदुक्तं चर्च्चरीनृतयं रसरागलयानुगम्॥
(भरत कोषः चन्द्रिका, चारुश्रवणिके, 834, कुम्भः)

अर्थात्–दो पैरों से ताल युक्त मनोहर गीतों का वर्णन करने वाले, वासंती उत्सवों में विभिन्न देशों में भ्रमण करने वाले ऐसे चर्चरी नृत्य करने वाले।

चार्यङ्गविनियोगः

नृत्ये नाट्यगतौ वेषः प्रयोक्तव्यो मनीषिभिः।
प्रधानं यो यदा यत्न हस्तपादोऽथवा भवेत्॥

सोऽग्रे तदनुगोऽन्यः स्यात्साम्ये तु समकालता।
यतः पादस्ततो हस्तो यतो हस्तस्ततस्त्रिकः॥

चारणानुचराण्याहुरङ्गानि किलसूरयः
एवं चारी प्रधानतवे स्यादङ्गविनियोजनम्॥

प्राधान्ये हस्तकानां तु हसतमङ्गान्युपासते।
वारं वारं यथा ह्यार्या चरणाः श्रयते महीम्।

कारं कारं करद्वन्द्वे चाश्राम्यति कटीतटे
अर्धचन्द्रः करो नाट्ये संश्रयेत कटीतटम्।
प्रक्षप्रद्योतको नृत्ये पक्षवञ्चितकोऽथवा॥

चारीयं च चरेर्धातोरणयुटाङिषि जायते।
भावे तत्साधकतमं चरणो हस्तकाञ्चितः॥

समाचरणजङ्घोरुकटिनिष्पादिता क्रिया।
चारीति कथ्यते तज्ज्ञैस्तद्भदानभिदध्महे।

अङिघ्रणैकेन निष्पन्ना चारी चार्ये च कथ्यते।
चरणद्वयनिष्पन्ना चारी खण्डमिति स्मृतम्॥

खष्डैस्त्रिभिञ्चतुर्भिर्वा चारीमण्डलमुच्यते।
खण्डैस्त्रिभिर्भवेत्रासे चतुर्भिश्चतुरस्त्रके॥

सेयं चारी द्विधा ज्ञेया भौमीत्याकाशकीति च।
मार्गे षोडश भूम्यः स्युराकशिक्योऽपि षोडश।
देश्योऽपि द्विविधा भौम्य आकाशिक्य इति क्रमात्॥
(भरत कोषः चार्यु, चायुर्षाङ्गानि, 835, निप्रदासः)

अर्थात्–इस श्लोक में भी आचार्य विप्रदास ने बार-बार चारणानुरण अर्थात् चारणों द्वारा अनुसरण किया हुआ नृत्य नाट्य संगीत कर एवं पद्य ध्वनि यानी पैरों के आघात इत्यादि का अनेकानेक बातों का वर्णन अपने श्लोक में किया है।

साहित्य समीक्षा

शोध के दौरान विभिन्न विद्वानों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं डिजिटल मंचो के माध्यम से प्राप्त साहित्य विश्लेषणों का विवेचन–

डॉ. पुरु दाधीच जी कि पुस्तक कथक नृत्य शिक्षा द्वितीय भाग में वर्णित कथक नृत्य कि विकास धारा पृष्ठ संख्या 83 से 88 में चारणों के बारे में अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं रोचक जानकारी दी गईं है, जिसके अंतर्गत यह ज्ञात होता है कि भारत में संगीत, नृत्य, नाट्य, मूर्ति, अदि समस्त ललित कलाओं का विकास अनुवांशिक रूप से नट कहे जाते थे, इन नटो के भी कर्म परक अनेक नाम विभिन्न युगों में प्रचलित हुए, उत्तर वैदिक काल में गायको को सूत कहा जाता था, ये सूत ही बाद में महाभारत के गायक बने, नर्तकों को सैलूष कहा जाता था, तथा स्तुति पाठको को मागध सम्बोधित किया जाता था ये मागध परवर्तीकाल में बंदीजन, भाट, चारण इत्यादि कहे जाने लगे। डॉ. दाधीच जी से साक्षात्कार के माध्यम से उपरोक्त लिखे सभी तथ्यों की पुष्टि की गई एवं उनके मार्गदर्शन द्वारा हमने भरत कोष, नाट्य शास्त्र, संगीत रत्नाकर, एकादशनाटय संग्रह इत्यादि अनेक ग्रंथो में चारण जाती से सम्बंधित ज्ञान की प्राप्ति हुई। (दाधीच)

''10 वीं शताब्दी तक व्यावसायिक चारण जाती का उत्थान रहा। ये चारण महाकाव्य युग के सुतो और भांटो के वंशज है। पारम्परिक कथाओ का इन्होने सस्वर पाठ किया और बादमे इन्हे राजाओ और समय के साथ क्षेत्रीय रईसों का संरक्षण भी मिला।

व्यावसायिक चारण जाती ने जटिल भाषा में लिखे गए नाटकों के स्थान पर सर्व प्रथम जनता के लिए नृत्य नाटक का एक रूप प्रस्तुत किया इस रूप से अनुप्राणित व्यावसायिक कलाकारों का एक नया वर्ग नटी, नर्तकी अस्तित्व में आया। नृत्य नाटक की लोकप्रियता ने कला प्रेमी राजाओ को नयी संरचनाओं और साथ ही नटी वर्ग को सुरक्षा संरक्षण देने को प्रेरित किया। (आद्यरंगाचार्य 60)

वाल्मीकि ने अपनी रामायण लव-कुश से गवाई थी, इसी परंपरा को जिन लोगों ने वृत्ति के रूप में धारण किया वे लोग कुशीलव कहलाये, इन कुशीलवो का उल्लेख भारत मुनि के नाट्यशास्त्र में भी प्राप्त होता है–

नानतोदय विधाने प्रयोग युक्तः प्रवादने कुशलः।
कुशीलवादातव्याधितम यस्मात तस्मात् कुशीलवः स्यात॥

(नाट्य शास्त्र 35/106)

अर्थात्–जो विविध प्रकार के आतोद्य-विधान (वाद्य वृन्द, रचना या आर्केस्ट्रेशन) में क्रियात्मक रूप से दक्ष है तथा विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रो को बजाने में भी कुशल है, वे लोग कुशीलव के दातव्य (कथा-गान) में निष्णात होने के कारण ही कुशीलव कहे जाते हैं, कुशीलव गायक वादक के साथ साथ नर्तक भी थे। कामसूत्र के अनुसार हर पन्द्रहवे दिन या हर महीने किसी पूर्व निश्चित दिन को सरस्वती मंदिर में नगर निवासी एकत्रित होते थे और दूर से बुलाये गए कुशीलव नाटक करते थे। कौटिल्य के अर्थशात्र में कुशीलवो द्वारा नागरिको को प्रेक्षणक (नाटक) दिखाए जाने का उल्लेख है।

जाति भास्कर के अनुसार–ब्रह्मणि में वैश्य से विदेहिका नामक कन्या उत्पन्न होती है और ब्राह्मण द्वारा वैश्य स्त्री से अम्बष्ठ नामक पुत्र उत्पन्न होता है, यह विदेहिका कन्या अम्बष्ट पुरुष के साथ समागम करने से कुशीलव नामक पुत्र उत्पन्न करती है। यह गीत ज्ञाता और नृत्य करने के निमित्त देश देशांतर में गमन करता है। स्वयंभू ने इसका नाम चारण रख कर इसकी यही वृत्ति निर्दिष्ठ की है।

''ब्रह्मण्या वैश्य पुरुषानजाता वैदेहिक मता।
विपराद्वैश्यानगना जातो अमबष्ठ इत्यभिधीयते॥
सा वैदेही च चाम्बाष्ठासतयो जातः कुशीलवः।
नृत्यकर्ता स गीतज्ञे देश देशांतर ब्रजेत।
सास्य वार्ता च कथित चारणस्य स्वामभुवः॥

(जातिभास्कर, 214-16, पृ.463)

अर्थात्–उपर्युक्त विवरणों में बार बार कुशीलवो को चारण भी कहा गया है। यदि हम आज के युग में भी देंखे तो नर्तक, गायक, वादक का कार्य करने या प्रस्तुति का तरिका आज भी वैसा हि है जैसा कि कुशीलव ० चारण अपने समय में किया करते थे। संस्कृत कोशो में चारण शब्द कि व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई गईं है –

''चारयती प्रचारयति नृत्य गीता द्विविद्याम तज्जन्यम कीर्तिवा''

(दाधीच 85)

अर्थात्–नृत्य, गीत आदि विद्या किंवा तज्जन्य कीर्ति का जो प्रचार करे वह चारण है।

डॉ. अम्बादान रोहड़िया चारण गड़वी –स्वयं चारण जाती से आते है एवं एक टेलीफोनिक साक्षात्कार के माध्यम से चारणों से सम्बंधित अनेक तथ्यों पर उन्होंने प्रकाश डाला है। इनके बताये हुए तथ्यों के अनुसार चारणों का निर्माण शिव और शक्ति के तेज से हुआ, सति के आत्मविलोपन की कथा में इसका उल्लेख मिलता है। (गड़वी)

डॉ. अम्बादान जी की एक गुजरती पुस्तक 'चारणी साहित्यः विविध संहर्ले' में संकलित कुछ श्लोक चारणी साहित्य के शास्त्रीयता की सरलता से पुष्टि करते है–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराज्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥

(यजुर्वेद, अध्याय - 26, मंत्र - 2)

अर्थात्–यजुर्वेद के दिए गए इस श्लोक में, बताया गया है की–ये कल्याणकारी वेद वाणी, मै सभी मनुष्यों के लिए कह रहा हूँ, ये कल्याणमय वेद वाणी मै ब्राह्मण तथा क्षत्रिय, शूद्र और आर्य तथा स्वयं चारण अपने ऋषि स्वरूप चारण को बोल रहा हूँ।

ततोरावणनितायाः सीताया शत्रुकर्षणः।
इयेष पदम्वेष्टुं चरणाचरिते पथि॥

(सुन्दरकांड, 1/1)

अर्थात्–शत्रु का संहार करने वाले हनुमान जी ने रावण द्वारा सीता जी का अपहरण करके जिस स्थान पर उन्हें रखा उस स्थान की खोज करने के लिए आकाश मार्ग से जाने का निर्णय किया जिस मार्ग से चारण समुदाय आकाश में विचरण करते थे।

तद्भुतं राघावकर्म दुष्करम समीक्ष्य देवाः सह सिध्ष्टचारणैः।
उपेत्य रामं सहसा महर्षिभिस्तमाभ्यसिंचन सुशुभैरजलैः पृथक॥
जयस्व शत्रून नरदेव मेदिनीम सासागराम पालय शाश्वतीः समाः।
इतीव रामं नरदेवसत्कृतं शुभैरवचोभिर्विविधैरपुजयन॥

(सुन्दरकाण्ड, 22/88-89)

अर्थात्–समुद्र पर सेतु बाँधने का श्री राम चंद्र जी का कठिन व अद्भुत कार्य देखकर सिद्धो, चारणो, महर्षियों, के साथ देव त्वरित उनके पास आये और सभी ने भिन्न भिन्न पवित्र एवं शुभ जल से श्री राम का अभिषेक किया और मनुष्यों एवं देवो के द्वारा इनका सत्कार हुआ, श्री राम को आशीर्वाद देते हुए कहा की हे नरदेव आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे और समुद्र पर्यन्त की पृथ्वी का सदैव पालन करते रहे इस तरह से भिन्न-भिन्न मंगल वचनो के द्वारा उन सबने मिलकर श्री राम को अभिनन्दन किया।

तं चारणसहस्त्ररणाम मुनिनामगमम तदा।
श्रुत्वा नादपुरे नृणां विस्मयः सम्पद्यत॥

(महाभारत, आदिपर्व : 124 - 11)

अर्थात्–पाण्डु राजा और माद्री के मृत्यु के पश्चात् चारण ऋषि मुनियो ने कुंती और उनके पांचो पुत्रो को हस्तिनापुर पंहुचाया उस समय हजारो चारण मुनियो के आगमन से हस्तिनापुर के प्रजा जनो को बड़ा आश्चर्य हुआ।

देवसर्गस्वाष्टविधो विभुधाः पितरोरसुराः।
गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणाः॥ 27॥
भूतप्रेत पिशाचाश्च विद्याधराः किन्नरादयः।
दशैते विदुराख्याताः सर्गास्ते विश्वस्त्रिक्कृताः॥ 28॥

(महाभारतः स्कन्द -3; 10/27/28)

अर्थात्–मैत्रेय जी विदुर जी से कहते है की–हे विदुर, देवों, पित्रो, असुरो, गन्धर्वो, अप्सराओं, यक्ष, राक्षसों, सिद्ध चारणो, विद्याधरों, भूत, प्रेत, पिशाचो, किन्नर, किम्पुरुषों, देव सर्ग दशमो, कुल इतने प्रकार है, इस प्रकार जगत करता ब्रह्मा जी के द्वारा रची हुई सृष्टि की बात मैंने आपसे कही है।

गन्धर्वाप्सरसः सिद्धाः किन्नरोरगचारणाः।
नान्त गुरणाम गछन्ति तेन्नांतोरयमव्ययः॥

(विष्णुपुराण; द्वितीय अंशः 5/24)

अर्थात्–गन्धर्वो, अप्सराओं, सिद्धो, किन्नरों, सर्पो, तथा चारणो, द्वारा भी भगवन श्री विष्णु के गुणों का मर्म प्राप्त नहीं किया जा सकता इसीलिए तो उनको अनंत कहा गया है।

गन्धर्वोपसरसः सर्वे नागाः यक्षाः सराक्षसाः।
खादका खेचारशवान्ये किन्नरा देव-चारणाः॥

(ब्रह्मपुराणः 87/3)

अर्थात्–भगवान देवादिदेव महादेव श्री शंकर भगवान के विवाह के समय गन्धर्व, नाग, यक्ष, राक्षस, किन्नर, देवता और चारण ये सभी उपस्थित थे।

देवदानवगंधर्वऋषयःसिद्धचारणाः।
सदासेवंतितत्तीर्थंगंगायमुनसंगमे॥

(पद्मपुराणः तृतीया खंड, पृ. 1428)

अर्थात्–देव, राक्षस, मुनि, सिद्धचारण, सभी गंगा यमुना के संगम से जुड़े तीर्थो की सदैव सेवा अर्चना करते थे।

चारणाय ततः प्रादात कलिङ्ग देशमुक्तमं।
पृथुः प्रसाद धर्मात्मा हैहयं देशमेव च॥

(पद्मपुराण; भूमिखंड; 24/88)

अर्थात्–पृथु राजा ने प्रसन्न होकर चारणों को पृथ्वी पे कलिङ्ग राज्य प्रदान किया।

मतों वेदान भवान प्राप्य करिष्यति मखम शुभं।
यज्ञाद देवा भविष्यन्ति त्रिधा भूता गुणत्रयाः॥
सिद्धा विद्याधराश्वैव चारणाः सात्विकास्त्रिधा॥

(भविष्य पुराण, तृतीया खंड, 45)

अर्थात्–भगवान विष्णु ब्रह्मा जी को कहते है–आप मेरे पास से वेदो को प्राप्त करके जो भी शुभ यज्ञ करेंगे, और इस यज्ञ से देवो उपरांत तीन प्रकार के जीव और तीन प्रकार के गुण प्रकट होंगे, जिसमे सात्विक प्रकार में सिद्ध, विद्याधर, चारण ये तीनों होंगे।

गुह्याय वेदनिलयाय महोदराय, सिंहाय दैत्यनिधनाय चतुभुर्जाय।
ब्रह्मेन्द्र रूद्र-मुनि-चारण सन्तुताय, देवोत्तमाय विरजाय नमोअच्युताय॥

(गजेंद्र मोक्षः 68)

अर्थात्–जो गूढ़ है, गु' है, और वेद जिनका घर है, या तो वेदो का जो घर है, और जो विशाल उदर वाले है और जो नरसिंम्ह रूप धारण करने वाले है, दैत्यों के मृत्यु स्वरूप है, चतुर्भुज है, ब्रह्मा, इन्द्र, रूद्र, महामुनि और चारण जिनकी स्तुति कर रहे है, जो देवो में सर्वश्रेष्ठ है, जो रजोगुण रहित है, और जो अपने स्थान से एवं स्वरूप से अलग नहीं होते, ऐसे परम ब्रह्म स्वरूप प्रभु को मेरा नमस्कार हो मै उनका वंदन करता हूँ।

अस्यापि द्यां स्पटशति वशिनश्र्वारणद्वंद्वगीतः
पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः॥14॥
गौतम, अयं स बलभित्सखो दुष्यन्तः।

(अभिज्ञान शाकुंतलम, कालिदास, द्वितीय अंक, 14 श्लोक पृ. 78)

अर्थात्–अभिज्ञान शाकुंतलम में राजा दुष्यंत एवं उनके विदूषक के संवाद के मध्य दो ऋषि पुत्र पधारते है और वो कहते है की ये राजा ऋषियों के लिए आश्रय बनाता है और स्वयं गृहस्थ आश्रम में रहकर भी ऋषियों की सेवा में तत्पर है, उनके पुण्यो का यशोगान चारण युगलो द्वारा आकाश तक पहुँच रहा है इस सन्दर्भ में चारणों के गीतों को ईश्वरीय वरदान के सामान सम्मान प्राप्त था एवं उनके मुख से गीतों द्वारा उल्लेख अलौकिक अनुभूतिया का भाग था (ऐसा मन जाता है, की चारण युगलो में आकाश गमन करते हुए कीर्ति एवं यशोगान द्वारा लोगों में नाना प्रकार के अध्यायों का उल्लेख किया करते थे।

अनुसन्धान अंतराल की पहचान एवं निष्कर्ष

ये सर्वथा प्रमाणित है कि चारणों ने भूलोक में कुशीलव के पथमार्गी होकर नृत्य व संगीत का प्रचार प्रसार किया परन्तु कथक और चारण के अन्तर्सम्बन्धिय शास्त्रीय ग्रंथो के शोध की आवश्यकता है, शोध ग्रंथो की कमी है। ग्रंथों के अभाव के साथ साथ आज के युग में चारणों का अधिंकाश कार्य साहित्य, कवित्त एवं गायन में पाया गया है। नृत्य व वाद्यों से उनका सीधा सम्बन्ध आज के समय में समुचित रूप में पाया नहीं गया है।

चारण समाज का मूल स्वरूप कथा वाचन है और कत्थक नृत्य से उसका सशक्त सम्बन्ध स्थापित होने वाले प्रमाणों का अभाव है।

समस्या का विधान

चारणों की नृत्य एवं संगीत के प्रचार में प्रमुख भूमिका व इसके प्रसार से उनका गहरा शास्त्रीय अन्तर्सम्बन्ध है।

अध्यन के शोध प्रश्न

इस विषय को लेकर शोध प्रश्न जो सामने आते है, मुख्यतया निम्न है–

1. संगीत व नृत्य के प्रचार प्रसार में और चारणों के बीच सम्बन्ध है या नहीं, यदि है तो वो आधुनिक संगीत व नृत्य को कैसे प्रभावित

करते है और उनका स्वरूप पुरातन काल में क्या था और आज क्या है।

2. यदि सम्बन्ध है तो उनके प्रांतीय उपलभ्धता और नाम भिन्न क्यों है?
3. कोई कथाकार नर्तक या संगीतज्ञ आधुनिक युग के चारण जाती से है या नहीं?

अध्ययन का लक्ष्य

संगीत व नृत्य का चारणों से क्या शास्त्रीय अन्तर्सम्बन्ध है एवं क्या इस जाती का कोई योगदान नृत्य या संगीत के विकास में है? एवं यदि है तो वो किस प्रकार का योगदान है।

अध्ययन के उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य जो शोध का है वो यह है कि आधुनिक नृत्य में चारणों का अन्तर्सम्बन्ध है या नहीं, योगदान है या नहीं और अगर है तो कितना प्रभावशाली है और अगर नहीं है तो विभिन्न ग्रंथों जैसे संगीत रत्नाकर, जातीभास्कर, नाट्यशास्त्र या वाल्मीकि रामायण इत्यादि अनेक माहान ग्रंथों में इनका उल्लेख क्यों आया है।

अध्ययन के चर

संगीत व नृत्य एवं चारण जाती के शास्त्रीय अंतर्सबंधीय तथ्य अध्ययन के चर है।

शर्तो और अवधारणाओं की परिभाषा

- संगीत व नृत्य में चारणों के योगदान का साक्षात् प्रमाण होना चाहिए
- संगीत व नृत्य में चारणों के प्रांतीय छाया का भी प्रमाण होना चाहिए
- चारणों की कथा वाचन एवं गायन शैलियों में आधुनिक संगीत व नृत्य की पद्धतियों का प्रमाण होना चाहिए
- इतिहास में चारणों एवं कथिको की सामूहिक प्रस्तुतियों की प्रमाण होने चाहिए।

मूलभूत पूर्वानुमान

चारणों का संगीत व नृत्य के विकास में निसंदेह प्रभाव रहा है, यदि नहीं रहा होता तो इतने सारे प्रमाण पूर्व में हमें नहीं मिलते कि हर युग में उनकी उपस्थिति और कथाओं का प्रचार, प्रसार, गायन व संगीत के माध्यम से करना अपने आप में एक प्रमाणिकता लिए हुए हैं।

मूलभूत पूर्वानुमान की श्रेणी में हम कह सकते हैं कि हां निश्चित ही चारणों का संगीत व नृत्य के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

अध्ययन का दायरा

चारणों के ऊपर अध्ययन करना उनके बारे में जानना उनके मूलभूत कार्यों एवं किए गए योगदान को समझना एवं इतिहास में उनके द्वारा किए गए प्रयोगों को आज के संगीत व नृत्य के साथ जोड़कर देखना।

अध्ययन का परिसीमन

परिसीमन की दृष्टि से शोध का पूरा दायरा केवल हमारे शोध के विषय के ऊपर ही होना चाहिए अर्थात् चारण और उनके साहित्य एवं उनके योगदान इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

अध्ययन का महत्त्व / प्रासंगिकता

चारणों का योगदान और उनका महत्त्व संगीत व नृत्य के क्षेत्र में एक अत्यंत प्रासंगिक विषय है क्योंकि अब तक जो भी तथ्य सामने आ रहे हैं उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि, निसंदेह संगीत व नृत्य के विकास में कथा वाचन, नर्तन, एवं वादन के क्षेत्र में चारण लोगों, साधकों एवं साहित्यकारों की एक प्रमुख भूमिका सदैव से रही है जिसके प्रमाण संगीत रत्नाकर, ब्रह्म पुराण इत्यादि अति विशिष्ट ग्रंथों में मिलते हैं।

अनुसंधान क्रिया विधि

अध्ययन का नमूना

विभिन्न प्रकार की शोध पत्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के सामाजिक मंच एवं शोधकर्ता जिन्होंने कोई भी शोध कार्य विशेषतः चारणों के ऊपर अथवा चारण जाति से जुड़े उनके साहित्य नृत्य, संगीत एवं किसी भी अन्य जुड़े हुए पहलुओं की ओर इंगित करें ऐसे कार्यों के माध्यम से।

अध्ययन के उपकरण—साक्षात्कार विधि

प्रश्नावली विधि

वैधता का माध्यम—किसी भी शोध कार्य में हमें जो भी साहित्य साहित्यकार उनकी लेखनी, ग्रंथों में दी गई सूचनाएँ, इतिहास और इतिहासकारों द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाएँ, दस्तावेज चलचित्र, ध्वनि मुद्रण द्वारा प्राप्त जानकारी या संकलन या शोध के विषय से संबंधित कोई भी जानकारी ही शोध की वैधता का माध्यम बनती है।

संग्रह प्रक्रिया

गुणात्मक-मात्रात्मक—शोध की प्रक्रिया या शोध कार्य जब भी किसी जाति विशेष, साहित्य विशेष, समाज विशेष पर आधारित होता है तो वह मूलतः मात्रात्मक विशेष ना होकर गुणात्मक ही होता है।

निष्कर्ष

ये शोध पूर्णतः साहित्य समीक्षा, चारणों के साक्षात्कार व उनके गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है।

चारणों से सम्बंधित प्राप्त जानकारियों के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है की उनकी वाणी में साक्षात् माँ सरस्वती का वास होता है, अन्यथा मंत्रो की तरह कविताओं को बोलना किसि भी विषय के ऊपर कविताये बना के गाना और शस्त्रीय रागो के माध्यम से तक्षण प्रस्तुत करना ये कोई दिव्य कृपा बिना संभव नहीं है। शास्त्रों और साहित्यों में दिए गए उनके वर्णनों को ध्यान में रखते हुए ये मानने में कोई संशय नहीं

की संगीत के प्रसार और प्रचार में चारणों कि पुरातन काल से आधुनिक काल तक एक अत्यंत प्रमुख भूमिका रही है।

1. चारण समुदाय सदैव से राजाओ व उनके राज्य सभाओं में विशेष स्थान के अधिकारी हुए है एवं आज भी उन्हें सांस्कृतिक व साहित्य के उत्कृष्ट ज्ञाताओं में स्थान दिया जाता है।
2. चारणों के गुणों के कारण, चाहे व रामायण काल में सीता जी का पता बताने के लिए हनुमान जी का मार्गदर्शन हो, या महाभारत काल में कुंती व उनके पुत्रो के देश में पुनरागमण में सहयोग हो, वो सदैव ही पूजे व सराहे जाते रहे है। कुशीलवो का भी मूल स्वरूप चारण ही था एवं साहित्य व धर्म का संचार ही उनका मूल लक्ष्य रहा है।
3. चारण अपने चतुर्वेदो के ज्ञाता होने के कारण श्लोको, वाद्यों व संगीत का प्रयोग सामाजिक चेतना के विकास के लिए करते रहे है एवं आज भी पाए जाने वाले चारणों में ये दर्शनीय है।
4. चारण इतिहास के अनुसार सिंध प्रदेश और फिर कच्छ, सौराष्ट्र, मालवा, राजस्थान इत्यादि प्रदेशो में गए। राजस्थान में इन्हे राजाश्रय प्राप्त हुआ और मेरे शोध अनुसार आज भी वो राज परिवार के लोगों के साथ जुड़े हुए है। मारु (मारवाड़), कछेला(कच्छी), सोरठिया(सौराष्ट्री) तथा तुम्बेल ये चार चारणों के प्रमुख भेद है। सौराष्ट्र में इन्हें गढवी भी कहा जाता है। आज भी ये जातियाँ भारत वर्ष में पायी जाती है एवं इनपर शोध जारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

दाधीच, पुरु, बिंदु प्रकाशन, इंदौर संस्करण 5, प्रकाशन वर्ष 2013, द्वितीय अध्याय, कत्थक नृत्य का उद्भव और विकास, पृ 85, कथक नृत्य शिक्षा भाग - 2

चारण, रोहड़िया, चारणी, अम्बादान, साहित्य : विविध संहर्ले, डिवाइन पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -जून 2020, पृष्ठ संख्या 18, पद्मपुराण; भूमिखंड; 24/88

शारंगदेव, संगीत रत्नाकर (अनुवाद)उद्धृत : चौधरी सुभद्रा, राधा पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण-2009, अध्याय- 7, श्लोक संख्या-1329, चतुर्थ खंड पृष्ट संख्या-346

चारण, रोहड़िया, चारणी, अम्बादान, साहित्य : विविध संहर्ले, डिवाइन पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -जून 2020, पृष्ठ संख्या 15, पद्मपुराण; भूमिखंड; 24/88

कवी रामकृष्णा, भरत कोश उद्धृतः आई वि सुब्बाराव (आईएएस) पब्लिकेशन, टी टी डी रेलीजियस पब्लिकेशन सीरीज संख्या 230, भरत कोषः चन्द्रिका, चारुश्रवणिक, पृष्ट संख्या - 834, आचार्य कुम्भ

वही, पृष्ठ संख्या 835, निप्रदासः

दाधीच, पुरु, कथक नृत्य शिक्षा भाग, 2, बिंदु प्रकाशन, इंदौर संस्करण 5, प्रकाशन वर्ष 2013, पृ.83-88

आद्यरंगाचार्य, भारतीय रंगमंच, उद्धृतः कथक नृथ्य शिक्षा, भाग-2, बिंदु प्रकाशन, इंदौर, संस्करण-5, 2013

भरत, नाट्य शास्त्र, उद्धृतः वही

मिश्र हरिदत्त, जाति भास्कर, उद्धृत वही

चारण, रोहड़िया, अम्बादान, चारणी साहित्य : विविध संहर्ले, डिवाइन पब्लिकेशन, राजकोट, प्रथम संस्करण -जून 2020, पृष्ठ संख्या 12, यजुर्वेद, अध्याय-26, मंत्र – 2

वही, सुन्दर कांड, 1/1, पृष्ठ संख्या 13

वही, सुन्दर कांड, 22/88-89, पृष्ठ संख्या 13

वही, महाभारत, आदिपर्व : 124-11, पृष्ठ संख्या 14

वही, महाभारत स्कन्द-3, 10/27/28 पृष्ठ संख्या 14

वही, विष्णुपुराण, द्वितीय अंश 5/24, पृष्ठ संख्या 17

वही, ब्रह्मपुराण 87/3, पृष्ठ संख्या 17

वही, पद्मपुराण : तृतीय खंड, पृष्ठ संख्या 18

वही, पद्मपुराण : भूमिखंड 24/88, पृष्ठ संख्या 18

वही, भविष्य पुराण, तृतीया खंड, 45, पृष्ठ संख्या 18

वही, गजेंद्र मोक्ष 68, 1/1, पृष्ठ संख्या 19

गोडबोले, नारायण बालकृष्ण, परब, काशीनाथ पांडुरंग, अभिज्ञान शाकुंतलम (अनुवाद), कालिदास महाकवि, द्वितीय अंक, वर्ष 1908, मुंबई, पृष्ट संख्या 78, श्लोक 14

साक्षात्कार

चारण रोहड़िया, अम्बादान, साक्षात्कार द्वारा : अक्षोभ्य भारद्वाज, 24 अप्रैल 2023, राजकोट, गुजरात

दाधीच, पुरु, साक्षात्कार द्वारा : अक्षोभ्य भारद्वाज फेब्रुअरी 2023, अगस्त 2023, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत